आमुख कथा

निर्विचार

चेतना का रहस्य

प्रश्न : ओशो, मुझे निर्विचार चेतना को उपलब्ध हुए बहुत दिन हो गये है। अब मुझे इस निर्विचारता में कोई आनन्द नहीं मिलता है। मुझको अब जीने की इच्छा नहीं होती है। सिवाय आत्महत्या के कुछ भी नहीं सुझता। कृपया मुझे रास्ता दिखायें।

महेश कुमार गिनोड़िया!

किस भ्रांति में पड़े हो? निर्विचार चेतना को उपलब्ध हुए तुम्हें बहुत दिन हो चुके! कैसी यह निर्विचार चेतना है, जिसमें अभी आत्महत्या के विचार सूझ रहे हैं! कैसी यह निर्विचार चेतना है, जिसमें कोई आनन्द नहीं मिल रहा है। तुमने तो सब बुद्धों को हरा दिया। तुम तो बुद्धू हो कर बुद्धों को मात किये दे रहे हो! सब बुद्धों को बुद्धू सिद्ध किये दे रहे हो! तुम तो निरपवाद हो! तुमने तो गजब कर दिया! ऐसी बात तो कभी किसी ने कही नहीं! तुम होश में हो या पागल हो?

निर्विचार, निर्विकल्प चेतना को जो उपलब्ध हो जाता है, वह बचता ही नहीं—आत्महत्या किसकी? वह तो मर ही गया। वह तो समाप्त हुआ। यह जो तुममें मैं-मैं बोल रहा है, यह नहीं बचता। तुम अपने प्रश्न को फिर से देखो।

'मुझे' निर्विचार चेतना को उपलब्ध हुए बहुत दिन हो गये हैं। अब 'मुझे' इस निर्विचारता में कोई आनन्द नहीं मिलता है। 'मुझको' अब जीने की इच्छा नहीं होती है।

यह कौन बचा! निर्विचार चेतना या निर्विकल्प चेतना में 'मैं' तो बचता ही नहीं। और जहां 'मैं' नहीं बचता, वहां कौन मिटेगा! क्या मिटना चाहोगे!

और अगर आत्महत्या करने का ही विचार उठता है, तो क्या मुझसे आत्महत्या का रास्ता पूछने आये हो! तुम मुझको भी फंसाओगे! मैं वैसे ही झंझटों में हूं! रास्ता तो मैं बताऊंगा, क्योंकि पूछोगे, तो बताऊंगा।

मगर मुझे लगता नहीं कि तुम मरना चाहते हो। क्योंकि मरना जिसको हो, वह कोई रास्ता पूछता फिरता है! अरे इतनी गाड़ियां चल रही हैं, किसी के भी नीचे लेट जाओ! इतने पहाड़ खड़े हैं, काहे के लिए? कूद जाओ! सरकार इतने पुल बनाती है—किसलिए? इतना सब आयोजन करते हैं, आखिर तुम्हारे ही लिए ना!

एक आदमी आत्महत्या कर रहा था। पुल पर से कूदने को जा रहा था कि पुलिस वाले ने उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'भाईजान, क्या कर रहे हो? सर्द रात्रि है, इतनी ठण्ड है, पानी बर्फ जैसा है; तुम कूदोगे, तो मुझे भी कूदना पड़ेगा, तुम्हें बचाने के लिए। अब तुम्हें तो मरना ही है; मुझे निमोनिया वगैरह हो गया, तो मैं नाहक मारा जाऊंगा। अरे भैया, घर जा कर फांसी क्यों नहीं लगा लेते? रस्सी चाहिए हो, मैं दे दूं! मुझ पर कृपा करो। यह रस्सी ले लो; घर जा कर गले में बांध लेना। लटक जाना अपने छप्पर से। कम से कम मुझे तो न मारो!'

तुम भी पूछ रहे हो कि रास्ता बतायें। अब रास्ता क्या बताना है! इतने रास्ते तो हैं, किसी भी रास्ते पर मर सकते हो। रास्तों पर लोग जाते काहे के लिए हैं! रोज तो लोग रास्तों पर मर रहे हैं। कहीं ट्रक की टक्कर से। कहीं बस गिर गयी। तुम्हें बसें नहीं मिल रही हैं, जो गिरती हैं! आजकल कौन-सी बसें पहुंचती हैं! बस यानी 'बस'! अब कहां आना-जाना! आवागमन से मुक्ति! कोई भी सरकारी बस पकड़ लो।

और इतने सरदार जी ट्रक चलाये जा रहे हैं, एकदम धूआंदार ताड़ी पिये हुए और तुम मुझसे पूछने आये हो! तुम यहां तक आ गये बच कर, यही अद्भुत है! रास्ते में कितने अवसर न आये होंगे! कितनी स्त्रियां कारें चलाने लगी हैं! अरे किसी के भी सामने आ जाओ! और ज्यादा दिक्कत हो, तो अपनी पत्नी को कार चलाना सिखा दो। वहीं घर में ही फैसला कर देगी। जैसे ही निकालेगी गैरेज से कार, खड़े हो जाना सामने! बस, पर्याप्त है।

मरने के तो कितने उपाय हैं। और निर्विचार आदमी को इतनी भी अकल नहीं आयी अभी तक! निर्विचार आदमी तो जीने तक के उपाय कर लेता है; तुम मरने की भी नहीं कर पा रहे हो!

यहां भी मैं मरना सिखाता हूं—मगर और तरह का। और वह तो मैं तुम्हें कैसे सिखाऊं! तुम वैसे तो कह रहे हो कि निर्विचार को पा ही चुके; नहीं तो यहां मैं मरना ही सिखाता हूं। न हो तो तुम इन दो महिलाओं से मिलो।

रंजन ने लिखा है—'भगवान, तेरी बगिया बड़ी प्यारी! मैं तो गई मारी, आके यहां रे!' अब इस रंजन से मिलो। यह मर भी चुकी, मगर अभी भी गीत गा रही है!

और एक से तुम्हें भरोसा न आता हो, कि गवाही से क्या होता है, तो तुम अमृता से मिलो। अमृता कहती है : 'भगवान, आपकी अदाएं तोबा? मर गये हम तो!!' लोग अदाओं में मरे जा रहे हैं; प्यारी बगिया देख कर मरे जा रहे हैं!

और यह रंजन और अमृता दोनों को दरवाजे पर रिसेप्शन पर बिठा रखा है इनको, कि जिनको भी मरना वगैरह हो, वहीं इनसे ही बात कर लिए। यह स्वागतद्वार पर ही बिठा रखा है इन दोनों को! ये दोनों होशियार हैं। बड़ी तरकीब से मर गयीं! और अभी भी गा रही हैं—और मस्त हो रही हैं!

मरना हो, तो कुछ ऐसा मरो। क्या तुम निर्विचारता...कैसी निर्विचारता साध बैठे! ताड़ी वगैरह तो नहीं पीते! क्या करते हो!

महेश कुमार गिनोड़िया! नाम भी तुम्हारा गजब है! गिनोड़िया—कि :गिनोरिया'! क्या-क्या नाम खोजे हुए हैं! जैसे कोई अच्छे शब्द बचे ही न हों!

देखो, निर्विचार चेतना ऐसे नहीं होती। और कई साल पहले मिल चुकी है तुम्हें! कई दिन हो गये हैं! पागलपन छोड़ो। ध्यान सीखो। यह वहम उतारो। इस तरह की मूढ़ताओं से कुछ सार नहीं है। क्योंकि निर्विचार चेतना मिल जाये, तो फिर कुछ पाने को नहीं रह जाता। फिर आनन्द ही आनन्द है। और आनन्द से कोई कभी ऊबा है!

सुख से आदमी ऊब जाये। जिसको हम तथाकथित सुख कहते हैं, उससे आदमी ऊब जाये, मगर आनन्द से कभी नहीं ऊबता। वही तो भेद है हमारा—आनन्द और सुख में। या बुद्ध ने जिसको सुख और महासुख कहा है। महासुख वह, जिससे कोई कभी नहीं ऊबता। सुख वह जिससे ऊब जाता है।

सुख का मतलब यह है कि यह स्त्री प्यारी लगती है। लगती ही प्यारी इसलिए है, जब तक मिली नहीं। मिल गयी—कि ऊबे। मिल गये—फिर क्या करोगे! दो-चार दिन में नयापन चला जायेगा—तुम्हारा भी, और उसका भी। वही भिण्डी की सब्जी रोज-रोज! वही भिण्डी खाते-खाते घबड़ाने ही लगोगे!

सुख से आदमी ऊब जाता है। कितना ही सुख हो...। एक ही फिल्म को देखने कितनी बार जा सकते हो! एक फिल्म में पहली दफा अच्छा लगेगा, सुख मालूम होगा। दूसरी बार वह मजा नहीं आयेगा, जो पहली दफा आया था, क्योंकि अब कुछ उघड़ने को न रहा। सब उघड़ चुका। अब कहानी मालूम ही है। पहले से ही मालूम है। और तीसरी बार भी देखना पड़े—और चौथी बार भी देखना पड़े, तो पगलाने लगोगे! अगर मजबूरी में ही दिखाई जाये फिल्म रोज-रोज—वही फिल्म—तो सात दफे के बाद फिर क्या तुम्हारा होश रह जायेगा; तब तुम पूछोगे कि आत्महत्या करने का कोई

सुख से आदमी ऊब जाये। जिसको हम तथाकथित सुख कहते हैं, उससे आदमी ऊब जाये, मगर आनन्द से कभी नहीं ऊबता। वही तो भेद है हमारा-आनन्द और सुख में। या बुद्ध ने जिसको सुख और महासुख कहा है। महासुख वह, जिससे कोई कभी नहीं ऊबता

लेकिन निर्विचार चेतना से कोई कभी नहीं ऊबता, क्योंकि वहां देखने को कुछ नहीं बचता। वहां दृश्य नहीं बचता। चूंकि दृश्य नहीं बचता, इसलिए कोई द्रष्टा भी नहीं बचता। न वहां दृश्य है—न द्रष्टा। न ज्ञाता न ज्ञेय। न वहां कोई भोक्ता है, न कुछ भोग्य। वहां कैसी ऊब!

तुम्हारी ऊब बता रही है कि तुमने आनन्द नहीं जाना है। और यह निर्विचारता का तुम जो दावा कर रहे हो, वह बिलकुल झूठा है। हो सकता है कि तुम सोचते हो कि तुमको निर्विचारता मिल गयी, मगर वह सोचना ही है तुम्हारा। वह भी विचार है तुम्हारा! यह कोई निर्विचारता नहीं है।

यहां रहो; निर्विचारता सीखो। यहां सारी ध्यान की प्रक्रियाएं हैं, जो तुम्हें निर्विचार करना सिखा दें। और जब आनन्द का तुम्हें स्वाद मिलेगा, तब तुम कहोगे कि इससे कैसे कोई ऊब सकता है।

आनन्द है ही वह सुख, जिससे ऊबा नहीं जा सकता। ऐसे सुख का नाम ही आनन्द है, जिससे ऊबा नहीं जा सकता। इस दुनिया में जिनको हम सुख कहते हैं, वे तो आज सुख हैं, कल दुख हो जाते हैं। जो कल दुख था, वह आज सुख हो जाता है। वहां सुख और दुख रूपांतरित होते रहते हैं। उनमें अदला-बदली होती रहती है। वहां सुख और दुख एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

हो सकता है, कोई मंत्र वगैरह पढ़ते होओ। और अगर मंत्र खूब जोर-जोर से पढ़ते हो, जैसा तुम्हारे ढंग से दिखता है, कि कोई जिद्दी किस्म के आदमी होओगे, तो हठयोगी वगैरह बन जाओ। लगा दी हठ एकदम—राम-राम जपने लगे। घण्टों राम-राम जपते रहे, तो एक तरह का सन्नाटा आ जायेगा। खोपड़ी भनभना जायेगी और कुछ भी नहीं, तो सन्नाटा आ जायेगा। उस सन्नाटे को तुम कि समझे कि निर्विचार हो गये—तो गलती में हो।

मंत्रों के जाप से नहीं होती निर्विचारणा। मंत्रों के जाप से तो एक तरह

मंत्रों के जाप से नहीं होती निर्विचारणा। मंत्रों के जाप से तो एक तरह की प्रसुप्ति आ जाती है, निद्रा आ जाती है। और निद्रा से ऊब जाओगे-निश्चित ऊब जाओगे। मंत्र-जाप करने वाले आज नहीं कल एक मंत्र से ऊब जायेंगे, उनको दूसरा मंत्र चाहिए

जाओगे—निश्चित ऊब जाओगे। मंत्र-जाप करने वाले आज नहीं कल एक मंत्र से ऊब जायेंगे, उनको दूसरा मंत्र चाहिए। जैसे एक पत्नी से ऊबे, एक पति से ऊबे, एक मकान से ऊबे, एक भोजन से ऊबे—ऐसे एक मंत्र से ऊब जायेंगे। कल उनको दूसरा मंत्र चाहिए; परसों तीसरा मंत्र चाहिए। एक गुरु से दूसरे गुरु के पास जाते रहेंगे। एक दुकान से दूसरी दुकान पर भटकते रहेंगे।

यहां मैं कोई मंत्र नहीं सिखाता। यहां तो निर्विचार होने की जो एकमात्र कीमिया है, वही सिखाई जाती है—साक्षी भाव। विचारों के साक्षी बनो। सिर्फ देखते रहो विचारों को। कोई राम-राम नहीं जपना है; कोई हरे कृष्ण नहीं जपना है। उन सबसे कुछ होने वाली संभावना नहीं है। कुछ होने का उपाय नहीं है।

सिर्फ देखते रहे, जो विचार की प्रक्रिया तुम्हारे भीतर चल रही है। और देखते-देखते चमत्कार घटित होता है। देखते-देखते तुम्हारे और तुम्हारे विचार के बीच फासला पैदा हो जाता है। इतना फासला पैदा हो जाता है कि तुम साफ देख सकते हो कि मैं विचार नहीं हूं। और जिस दिन यह दिखाई पड़ता है कि मैं विचार नहीं हूं, उस दिन विचार गिर जाते हैं। उसी दिन—उसी क्षण। और जहां विचार गिरे, वहां 'मैं' गिरा, क्योंकि 'मैं' स्वयं एक विचार है। और जहां विचार गिरे, वहां यह भाव भी गिरा कि क्या सुख, क्या दुख! ये भी सब विचार हैं।

निर्विचार क्या कोई हो गया, फिर कुछ बचता ही नहीं। 'निर्विचार हो गया हूं'—यह विचार भी नहीं बचता।

एक बौद्ध—परम बौद्ध—रिंझाई के पास एक युवक ने आ कर कहा कि 'आप कहते थे कि निर्विचार साध लो; साध लिया। अब बस निर्विचार ही निर्विचार रहा है।'

रिंझाई ने उससे कहा, 'अब तू इसको भी फेंक आ। फिर आना।'

उसने कहा, 'अब इसको कैसे फेंकूं!'

तो रिंझाई ने कहा, 'फिर एक विचार रह गया! अभी तू निर्विचार नहीं हुआ। अब जब सब फेंक दिया, तो एक और फेंक दे।'

वही जो महावीर ने कहा कि 'सारी नदी पार कर गया, अब किनारा न पकड़! अब किनारा भी छोड़ दे। सब छोड़ चुका, अब मुझे क्यों पकड़ता है! मुझे भी छोड़ दे!'

अब तुम इतनी कृपा करो, महेश कुमार गिनोड़िया, कि निर्विचार का भाव भी छोड़ दो। यह विचार भी विचार ही है। इसलिए हमने इस देश में, जिन्होंने जाना, उन्होंने, पंतजलि ने—समाधि के दो रूप कहे : सबीज और निर्बीज। 'सबीज समाधि' का अर्थ है : जिसमें इतना बीज मौजूद है अभी कि 'मुझे समाधि मिल गयी!' बस इसी बीज में से सब निकल आयेगा फिर से वापस। पूरा झाड़ फिर से खड़ा हो जायेगा। इसी एक बीज में से अंकुर निकलेंगे। फिर शाखायें खड़ी होंगी। फिर फल लग जायेंगे, फिर फूल लग जायेंगे। और इसी एक बीज में फिर हजारों बीज लग जायेंगे। निर्बीज होना पड़ेगा। इसलिए समाधि का जो दूसरा आत्यंतिक रूप है, वह 'निर्बीज समाधि' है। निर्बीज समाधि का अर्थ है : अब यह बीज भी न रहा कि 'मुझे समाधि मिल गयी।' अब दोनों बातें खत्म हो गयीं। न संसार—न मोक्ष। सब गया। अब कैसा सुख—कैसा दुख! इस घड़ी में ही आनन्द की वर्षा है। झड़ी लग जाती है। मूसलाधार बरसता है आनन्द। अंतहीन, शाश्वत, सदा-सदा के लिए। उससे कोई कभी नहीं ऊबा है। तुम नहीं ऊब सकते। कोई ऊब ही नहीं सकता। ऊबना असंभव है।

अच्छा हुआ, तुम यहां आ गये। अगर तुम्हारा यह विचार भी टूट जाये कि तुम निर्विचार हो गये हो, तो काफी है। और नहीं तो तुम उपद्रव में तो पड़ ही गये। तुमने एक झूठी धारणा बना ली और इस धारणा से अब तुम परेशान हो रहे हो। और धारणा से ऊब रहे हो। अब ऊब इतनी घनी हो रही है कि आत्महत्या तक करने का खयाल आने लगा! महावीर को नहीं आया, बुद्ध को नहीं आया। कृष्ण को नहीं आया, क्राइस्ट को नहीं आया। किसी ज्ञाता को नहीं आया आत्महत्या का खयाल। तुमको आ रहा है, तो जरूर कहीं चूक हो रही है। अपनी चूक पहचानो।

तुम ठीक समय पर यहां आ गये। और अच्छा हुआ कि बिना आत्महत्या किये आ गये। अभी भी मौका है; अभी भी निर्विचार सध सकता है। और यहां तो सारा का सारा विधान ही निर्विचार का है।

ध्यान पर ही मेरा एकमात्र जोर है। न आचरण पर, न चरित्र पर, न शील पर—किसी चीज पर जोर नहीं है; सिर्फ ध्यान पर। क्योंकि मेरी दृष्टि यह है कि ध्यान सधा तो सब सधा। इक साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।

– ओशो

रसो वै सः, प्रवचन-3, प्रश्न-2
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)